मुद्रास्फीति को रोकने के उपाय

मुद्रास्फीति के दोषों को देखते हुए इसकी रोकथाम करना सरकार का आवश्यक कर्तव्य होता है। मुद्रास्फीति की स्थिति का आरम्भ होते ही इसे दबा देना अधिक अच्छा होता है। मुद्रास्फीति के वेग को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं—

(1) **मौद्रिक उपाय** (Monetary Measures)—सरकार तथा केन्द्रीय बैंक कुछ ऐसी मौद्रिक उपाय अपनाते हैं जिनका उद्देश्य मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करना होता है; जैसे—

1. सरकार को चाहिए कि वह केन्द्रीय बैंक पर अतिरिक्त मुद्रा जारी करने के लिए दबाव न डाले। केन्द्रीय बैंक द्वारा भी पत्र-मुद्रा के निर्गमन के प्रबन्ध में अधिक दृढ़ता तथा अनुशासन लाने की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

2. मुद्रास्फीति के भयंकर होने की दशा में पुरानी मुद्रा समाप्त करके उसके बदले में नयी मुद्रा कम मात्रा में दे दी जाती है। प्रथम महायुद्ध के बाद रूस में इसी नीति को अपनाया गया था।

3. साख-नियन्त्रण के लिए केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को इस प्रकार के निर्देश देता है कि वे साख का अधिक सृजन तथा प्रसार न करें। बैंक-दर में वृद्धि, प्रतिभूतियों की बिक्री, बैंकों के न्यूनतम नकद-कोषों की मात्रा में वृद्धि, साख की राशनिंग आदि, ऐसे उपाय हैं जिनसे साख का संकुचन होता है। केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को इस प्रकार के आदेश देता है कि वे कुछ आवश्यक वस्तुओं, जैसे अनाज इत्यादि को गोदामों में रखकर उनके आधार पर ऋण न दें। इससे माल बाजार में आने लगता है तथा कीमतों पर प्रभाव पड़ता है।

मुद्रास्फीति को नियन्त्रित करने में मौद्रिक उपायों से सहायता मिल सकती है। मौद्रिक विस्तार में निरन्तर वृद्धि होने पर मुद्रास्फीति की गति बढ़ेगी। परन्तु यह सोचना एक भूल है कि केवल मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करके ही मुद्रास्फीति को रोका जा सकता है। क्राउथर के अनुसार, "मुद्रा की मात्रा को नियन्त्रित करके मुद्रास्फीति को रोकने की आशा करना पहाड़ी के नीचे की ओर दौड़ती हुई मोटरकार का पेट्रोल बन्द करके उसे रोक लेने की आशा करने के समान है।"[1]

(2) **राजकोषीय उपाय** (Fiscal Measures)—मुद्रास्फीति के उपचार हेतु मौद्रिक उपायों के साथ-साथ निम्नलिखित वित्तीय उपायों को भी अपनाना पड़ता है—

1. मुद्रास्फीति के नियन्त्रण के लिए यथासम्भव बजट सन्तुलित रखना आवश्यक होता है। घाटे का बजट होने पर सरकार को मुद्रा-निर्गमन का सहारा लेना पड़ता है।

2. करों में वृद्धि के द्वारा सरकार अपने साधनों में वृद्धि कर सकती है तथा समाज में अतिरिक्त क्रय-शक्ति को प्रभावहीन बना सकती है।

3. सार्वजनिक ऋण में वृद्धि से एक ओर तो लोगों के पास तरल मुद्रा की मात्रा कम होती है, दूसरी ओर सरकार ऋणों से प्राप्त किये गये धन को उत्पादन की वृद्धि करने में प्रयोग करती है जिसमें मुद्रास्फीति का वेग नियन्त्रित होता है।

4. सरकार को अपने द्वारा किये गये उत्पादन-कार्यों में पर्याप्त लाभ प्राप्त करना चाहिए तथा ऐसे उपाय अपनाने चाहिए जिससे इनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो सके।

5. सार्वजनिक व्यय, विशेषकर अनुत्पादक व्यय, को कम करना भी बहुत आवश्यक होता है।

6. वित्तीय उपायों द्वारा उपभोग को हतोत्साहित करके बचत को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

(3) **व्यापार सम्बन्धी उपाय** (Commercial Measures) – मुद्रास्फीति की दशा में आयात की मात्रा को बढ़ाना होता है जिससे उपलब्ध वस्तुओं की मात्रा में वृद्धि हो सके। परन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा करना सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि बिना निर्यात बढ़े आयात नहीं बढ़ाये जा सकते और निर्यात बढ़ाना ऐसे देशों के लिए बहुत कठिन होता है क्योंकि आन्तरिक कीमत-स्तर विदेशी कीमतों की अपेक्षा ऊँचा होता है। इन परिस्थितियों में सरकार द्वारा निरन्तर ऐसे उपाय करने की आवश्यकता होती है जिनसे नियन्त्रित रूप से आयात तथा निर्यात बढ़ सकें। मुद्रास्फीति के निरन्तर बने रहने पर सरकार मुद्रा की विदेशी विनिमय दर को गिराने अथवा अवमूल्यन (devaluation) करने के लिए विवश हो जाती है। परन्तु जहाँ तक सम्भव हो विनिमय दरों में स्थिरता बनाये रखने के प्रयास करने चाहिए।

(4) **निवेश-ढाँचे में परिवर्तन** (Changes in Investment Pattern)—स्फीति-काल में प्रायः निवेश की मात्रा बढ़ती है जिसके कारण न केवल मौद्रिक आय में वृद्धि होती है, अपितु उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि न होने के कारण मुद्रास्फीति को प्रोत्साहन मिलता है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि निवेश में वृद्धि को रोक दिया जाये, परन्तु सरकार को यह अवश्य देखना पड़ता है कि बढ़ते हुए निवेश के परिणामस्वरूप उत्पादन में तत्काल

---

1 "To hope to prevent inflation by limiting the expansion of the currency is like hoping to stop a motor car that is running downhill by turning off the petrol."

— Crowther : *An Outline of Money*, p. 286.

Scanned with CamScanner

तथा यथेष्ट मात्रा में वृद्धि हो। ऐसे कार्य जिनमें बहुत अधिक पूँजी का निवेश होता है तथा उत्पादन की प्राप्ति दीर्घकाल में होती है, स्फीति-काल में उपयुक्त नहीं होते।

(5) **आय-नियन्त्रण सम्बन्धी उपाय** (Income Control Measures)—पिछले कुछ वर्षों से पाश्चात्य देशों में स्फीति-नियन्त्रण के लिए आय-नीति (income policy) के अपनाने के पक्ष में अनेक सुझाव दिये गये हैं। आय-नीति का उद्देश्य मजदूरी-बन्धन (wage freeze) के उपाय करना होता है ताकि बढ़ती हुई मजदूरी उत्पादन की लागत में वृद्धि के द्वारा मुद्रास्फीति को प्रोत्साहन न दे पाये। मजदूरी बढ़ने से लागत तथा कीमतें बढ़ती हैं जिसके कारण पुनः मजदूरी को बढ़ाना पड़ता है और इस प्रकार एक ऐसा विषम चक्र बन जाता है जिससे छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। बढ़ती हुई कीमतों की स्थिति में व्यावहारिक रूप से आय अथवा मजदूरी को स्थिर रखना बहुत कठिन होता है; परन्तु फिर भी, सरकार द्वारा ऐसे उपाय तो किये ही जा सकते हैं कि विभिन्न वर्गों द्वारा आय में अनुचित वृद्धि के लिए दबाव प्रभावपूर्ण न होने पायें।

(6) **प्रत्यक्ष नियन्त्रण** (Direct Controls)—ऊपर बताये गये सभी उपाय मुद्रास्फीति को अप्रत्यक्ष रूप में नियन्त्रित करते हैं। मुद्रास्फीति कम करने के लिए सरकार वस्तुओं की कीमतों को प्रत्यक्ष रूप में भी नियन्त्रित कर सकती है। विशेषकर आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नियन्त्रित कर ही देना चाहिए। जिन वस्तुओं की माँग उनकी पूर्ति की अपेक्षा बहुत अधिक है उनका राशनिंग करना चाहिए। विदेशी व्यापार पर प्रत्यक्ष नियन्त्रण तथा देश की औद्योगिक नीति पर नियन्त्रण भी मुद्रास्फीति के विरुद्ध प्रयोग में लाये जाते हैं।

(7) **उत्पादन-वृद्धि** (Increase in Production)—मुद्रास्फीति का प्रभाव कम करने के लिए उत्पादन की मात्रा में वृद्धि करना भी आवश्यक होता है। ऐसे उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिनमें पूँजी का विनियोग तो कम हो परन्तु शीघ्र उत्पादन द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताएँ अधिक से अधिक पूरी की जा सकें। कृषि-उत्पादन में वृद्धि मुद्रास्फीति के नियन्त्रण में विशेष रूप से सहायक होती है।

यह स्मरण रहे कि मुद्रास्फीति के नियन्त्रण के लिए कोई भी अकेला उपाय प्रभावपूर्ण नहीं हो पाता इसलिए एक साथ विभिन्न उपाय करने पड़ते हैं। अप्रत्यक्ष उपायों में मौद्रिक, राजकोषीय, व्यापारिक, विनियोग तथा आय सम्बन्धी विभिन्न उपाय एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और उनको एक-दूसरे के सहयोग की आवश्यकता होती है। अप्रत्यक्ष उपायों के साथ-साथ कुछ विशेष वस्तुओं की कीमतों को प्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रित करना भी आवश्यक होता है तथा उत्पादन-वृद्धि के प्रयास करना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार, सन्तोषजनक ढंग से मुद्रास्फीति के नियन्त्रण के लिए उपर्युक्त सभी उपायों को एक साथ अपनाना अधिक उपयुक्त होता है।

Scanned with CamScanner